Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
(A National bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2395-7069(Print), Impact Factor: (Cosmos 7.650 & I2OR 5.120), Volume 12, No. 04, October-December, 2026, pp. 147-155

# नगदी–रहित अर्थव्यवस्था का बिहार के छोटे व्यापारियों पर प्रभावः गया जिले के विशेष संदर्भ में

**संजना कुमारी[1*] एवं डॉ. रामेश्वर प्रजापति[2]**

[1]शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।
[2]सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्रविभाग, एस. सिन्हा कॉलेज, औरंगाबाद, बिहार।

[*]Corresponding Author: sanju12201220@gmail.com

***Citation***: *कुमारी, संजना एवं प्रजापति, रामेश्वर (2026). नगदी–रहित अर्थव्यवस्था का बिहार के छोटे व्यापारियों पर प्रभावः गया जिले के विशेष संदर्भ में. Journal of Commerce, Economics & Computer Science, 12(04), 147–155.*

***सार***

*भारत में भुगतान की व्यवस्था पिछले एक दशक में नकद से डिजिटल की ओर तेज़ी से बढ़ी है। जन धन योजना (2014), यूपीआई (2016) और नवंबर 2016 की नोटबंदी ने इस परिवर्तन को गति दी। छोटे व्यापारियों के लिए यह परिवर्तन अवसर भी है और चुनौती भी, क्योंकि उनका कारोबार नकद और अनौपचारिक उधार पर टिका रहा है। यह शोध–पत्र एनपीसीआई, भारतीय रिज़र्व बैंक, वित्त मंत्रालय, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (बिहार), ट्राई और जनगणना 2011 के प्रकाशित आँकड़ों पर आधारित है। प्रतिशत, वृद्धि दर, अनुपात और प्रति इकाई औसत जैसे सरल माप निकालकर राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर की तुलना की गई है। निष्कर्ष बताते हैं कि यूपीआई का मासिक लेन–देन सितंबर 2022 से सितंबर 2026 के बीच लगभग 3.5 गुना हुआ, जबकि बिहार में ऋण–जमा अनुपात, इंटरनेट घनत्व और टेली–घनत्व राष्ट्रीय औसत के लगभग दो–तिहाई से 70 प्रतिशत के बीच हैं। गया की लगभग 87 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है, जिससे छोटे व्यापारियों के डिजिटलीकरण में ग्रामीण बाज़ारों की निर्णायक भूमिका का संकेत मिलता है। पत्र के अंत में प्राथमिक अध्ययन के लिए परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गई हैं।*

***शब्दकोशः*** *नगदी–रहित अर्थव्यवस्था, यूपीआई, नोटबंदी, वित्तीय समावेशन, छोटे व्यापारी, बिहार, गया।*

## प्रस्तावना

### पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक भारत के खुदरा व्यापार में नकद का वर्चस्व रहा। गया जैसे जिले का किराना दुकानदार माल नकद खरीदता और नकद बेचता था, तथा जान–पहचान के आधार पर "उधार" देता था। बैंक खाता प्रायः बचत या सरकारी भुगतान के लिए होता था, कारोबार चलाने के लिए नहीं।

पिछले दशक में कई नीतिगत कदमों ने यह स्थिति बदलीः

- अगस्त 2014: प्रधानमंत्री जन धन योजना की शुरुआत।
- अप्रैल 2016: एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस (यूपीआई) की शुरुआत।

*Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

- 8 नवंबर 2016: नोटबंदी, जिसमें 500 और 1000 रुपये के नोट चलन से बाहर हुए।
- जुलाई 2017: वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लागू हुआ।

इन परिवर्तनों को सामान्यतः नगदी–रहित या कम–नकद अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ना कहा जाता है। व्यवहार में लक्ष्य नकद को समाप्त करना नहीं, उस पर निर्भरता घटाना है।

**उद्देश्य**

- भारत में डिजिटल भुगतान की वृद्धि को प्रकाशित आँकड़ों से समझना।
- बिहार की स्थिति की तुलना राष्ट्रीय औसत से करना।
- गया जिले की जनसांख्यिकीय संरचना को बिहार और भारत के संदर्भ में रखना।
- नोटबंदी और छोटे व्यापारियों से संबंधित साहित्य का सार प्रस्तुत करना तथा शोध–अंतराल पहचानना।
- प्राथमिक अध्ययन के लिए परिकल्पनाएँ प्रस्तावित करना।

**शोध पद्धति**

- **प्रकृति एवं आँकड़ों के स्रोत**

यह अध्ययन वर्णनात्मक समीक्षा पर आधारित है और केवल द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग करता है। आँकड़े एनपीसीआई के मासिक यूपीआई आँकड़ों, भारतीय रिज़र्व बैंक के डिजिटल भुगतान सूचकांक, वित्त मंत्रालय और पीआईबी की जन धन रिपोर्टों, बिहार राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठकों में प्रस्तुत बैंकिंग आँकड़ों, ट्राई तथा दूरसंचार विभाग के आँकड़ों और जनगणना 2011 से लिए गए हैं। जिन आँकड़ों का मूल प्रकाशन समाचार या विश्लेषण माध्यमों के जरिए उपलब्ध हुआ, उन्हें उन्हीं माध्यमों के नाम से उद्धृत किया गया है।

- **प्रयुक्त सरल माप**
  - प्रतिशतः किसी भाग का पूरे में सौवाँ अंश।
  - वृद्धि दरः (नया मान − पुराना मान) ÷ पुराना मान 100।
  - गुनाः नया मान ÷ पुराना मान। जैसे 6.8 से 24.07 होना लगभग 3.5 गुना है।

चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR): यदि कोई राशि हर वर्ष समान प्रतिशत से बढ़ती, तो वह प्रतिशत। इससे भिन्न अवधियों की तुलना सरल हो जाती है।

  - प्रति इकाई औसतः कुल मान ÷ इकाइयों की संख्या, जैसे प्रति खाता औसत जमा।
  - अंतर एवं अनुपातः बिहार और भारत की तुलना प्रतिशत–अंक के अंतर या एक के दूसरे से अनुपात द्वारा।
  - तालिकाओं में जहाँ "गणनाः लेखक" लिखा है, वहाँ मान स्रोत में दिए कच्चे आँकड़ों से निकाले गए हैं।

**साहित्य समीक्षा**

रोगॉफ़ (2016) का तर्क है कि अत्यधिक भौतिक मुद्रा कर–चोरी और अनौपचारिक गतिविधि को बढ़ावा देती है, जो नकद घटाने की नीति का सैद्धांतिक आधार है। दूसरी ओर, जहाँ छोटा व्यापार मुख्यतः नकद पर चलता है, वहाँ नकद में अचानक कमी से अल्पकालिक व्यवधान संभव है।

डेविस (1989) का टेक्नोलॉजी एक्सेप्टेंस मॉडल बताता है कि लोग किसी तकनीक को तब अपनाते हैं जब वह उन्हें उपयोगी और उपयोग में आसान लगे। रोजर्स (2003) का नवाचार प्रसार सिद्धांत बताता है कि नई प्रथाएँ सामाजिक संपर्कों के माध्यम से फैलती हैं। इन दोनों के अनुसार किसी बाज़ार–गली में कुछ दुकानदारों द्वारा यूपीआई अपनाने पर पड़ोसियों के अपनाने की संभावना बढ़ जाती है।

नोटबंदी पर सबसे प्रामाणिक अध्ययन चोडोरो–रीच, गोपीनाथ, मिश्रा और नारायणन (2020) का है, जो क्वार्टरली जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स में प्रकाशित हुआ। नोटबंदी ने प्रचलित नकद के 86 प्रतिशत हिस्से को रातोंरात अवैध मुद्रा बना दिया था। जिन जिलों में नकद की कमी अधिक गंभीर थी, वहाँ आर्थिक गतिविधि में सापेक्ष गिरावट, वैकल्पिक भुगतान तकनीकों का तेज़ अपनाव और बैंक ऋण की धीमी वृद्धि दर्ज हुई। संचयी रूप से, 2016 की चौथी तिमाही में रोज़गार और रात्रिकालीन प्रकाश पर आधारित उत्पादन में कम से कम 2 प्रतिशत–अंक तथा बैंक ऋण में 2 प्रतिशत–अंक की कमी आई, और ये प्रभाव अगले कुछ महीनों में समाप्त हो गए।

विश्व बैंक की इंडिया डेवलपमेंट अपडेट (2017) के अनुसार नोटबंदी का समग्र व्यापक–आर्थिक प्रभाव सीमित रहा, किंतु खुदरा व्यापार जैसे अनौपचारिक कार्यों पर असमान प्रभाव की संभावना थी, क्योंकि ऐसे कार्य गैर–नकद भुगतान की ओर आसानी से नहीं जा पाते (काउंटरव्यू, 2017)।

समीक्षित स्रोतों में राष्ट्रीय या राज्य स्तर के समग्र आँकड़े अधिक हैं, जबकि बिहार या गया जैसे जिले के छोटे व्यापारियों पर केंद्रित सीधे अध्ययन उपलब्ध नहीं मिले। यही शोध–अंतराल प्राथमिक अध्ययन का आधार है।

## राष्ट्रीय परिदृश्य

- **यूपीआई की वृद्धि**

एनपीसीआई के आँकड़ों के अनुसार सितंबर 2026 में यूपीआई से 24.07 अरब लेन–देन हुए, जिनका मूल्य 29.37 लाख करोड़ रुपये रहा। यह सितंबर 2025 की तुलना में संख्या में 23 प्रतिशत और मूल्य में 18 प्रतिशत अधिक है। मासिक औसत के रूप में प्रतिदिन लेन–देन पहली बार 80 करोड़ के पार पहुँचा (आउटलुक मनी, 2026)। अगस्त 2026 में 24.51 अरब लेन–देन (29.82 लाख करोड़ रुपये) के साथ मासिक रिकॉर्ड बना था; सितंबर की मामूली गिरावट का कारण महीने में एक दिन कम होना है (स्टार्टअपटॉकी, 2026ख)। सितंबर 2022 में यूपीआई से 6.8 अरब लेन–देन और 11.17 लाख करोड़ रुपये का मूल्य दर्ज हुआ था (बिज़नेस स्टैंडर्ड, 2022)।

**तालिका 1: यूपीआई की चार वर्ष की वृद्धि**

| माप | सितंबर 2022 | सितंबर 2026 | कितने गुना | औसत वार्षिक वृद्धि (CAGR) |
|---|---|---|---|---|
| लेन-देन की संख्या (अरब) | 6.8 | 24.07 | लगभग 3.5 | लगभग 37% |
| कुल मूल्य (लाख करोड़ ₹) | 11.17 | 29.37 | लगभग 2.6 | लगभग 27% |
| प्रति लेन-देन औसत राशि (₹) | लगभग 1,643 | लगभग 1,220 | लगभग 26% कमी | - |

स्रोतः बिज़नेस स्टैंडर्ड (2022); आउटलुक मनी (2026)। गणनाः लेखक।

लेन–देन की संख्या कुल मूल्य से तेज़ बढ़ी, इसलिए प्रति लेन–देन औसत राशि लगभग 26 प्रतिशत घटी। इसका अर्थ है कि यूपीआई का उपयोग चाय, सब्ज़ी और किराना जैसे छोटे दैनिक भुगतानों में बढ़ा है, जो छोटे व्यापारियों के लिए सीधे प्रासंगिक है। साथ ही वार्षिक वृद्धि धीमी हुई हैः संख्या में 31 प्रतिशत (सितंबर 2025) से 23 प्रतिशत (सितंबर 2026)। यह प्रणाली के परिपक्व होने का संकेत है और आगे की वृद्धि उन क्षेत्रों से आएगी जहाँ उपयोग अभी कम है। अगस्त 2026 में फोनपे (45.64%), गूगल पे (32.26%) और पेटीएम (8. 03%) मिलकर लगभग 86 प्रतिशत लेन–देन संभालते थे (स्टार्टअपटॉकी, 2026क)।

- **आरबीआई का डिजिटल भुगतान सूचकांक**

यह सूचकांक देश में भुगतान के डिजिटलीकरण की गहराई मापता है और इसका आधार मार्च 2018 (मान 100) है।

**तालिका 2: आरबीआई–डीपीआई**

| अवधि | मार्च 2018 | मार्च 2021 | सितंबर 2021 | मार्च 2024 | सितंबर 2024 | मार्च 2025 | सितंबर 2025 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूचकांक | 100 | 270.59 | 304.06 | 445.5 | 465.33 | 493.22 | 516.76 |

स्रोतः भारतीय रिज़र्व बैंक (2023, 2024, 2026)।

सितंबर 2025 का मान 2018 की तुलना में लगभग 5.2 गुना है, और सितंबर 2024 से सितंबर 2025 के बीच वृद्धि लगभग 11 प्रतिशत रही (गणनाः लेखक)। यह सूचकांक राष्ट्रीय औसत है और किसी जिले या व्यापारी वर्ग की स्थिति नहीं बताता।

- **जन धन योजना**

19 अगस्त 2026 को जन धन खातों की संख्या 59.09 करोड़ और कुल जमा 3,16,514 करोड़ रुपये थी। इनमें 55.7 प्रतिशत खाते महिलाओं के और 77.8 प्रतिशत ग्रामीण एवं अर्ध–शहरी क्षेत्रों के हैं (क्रॉनिकल इंडिया, 2026)।

**तालिका 3: जन धन योजना**

| माप | 2015 | अगस्त 2026 | कितने गुना |
|---|---|---|---|
| खाते (करोड़) | 14.72 | 59.09 | लगभग 4.0 |
| कुल जमा (करोड़ ₹) | 15,670 | 3,16,514 | लगभग 20.2 |
| प्रति खाता औसत जमा (₹) | लगभग 1,065 | लगभग 5,356 | लगभग 5.0 |

स्रोतः क्रॉनिकल इंडिया (2026)। गणनाः लेखक।

सूचना के अधिकार के अंतर्गत प्राप्त उत्तर के अनुसार लगभग हर चौथा जन धन खाता निष्क्रिय है और करीब 5.72 करोड़ खातों में शून्य शेष है (सियासत, 2026)। अतः खाता खुलना और उसका नियमित उपयोग अलग बातें हैं।

## बिहार का परिदृश्य

- **बैंकिंगः जमा, ऋण और ऋण–जमा अनुपात**

ऋण–जमा अनुपात = बैंकों द्वारा दिया गया ऋण ÷ बैंकों में जमा राशि × 100। कम अनुपात का अर्थ है कि बैंक राज्य से बचत जुटा रहे हैं, पर उसी अनुपात में वहाँ ऋण नहीं दे रहे; यह छोटे व्यापारियों के लिए ऋण की उपलब्धता का संकेतक है।

बिहार में यह अनुपात 2018–19 में 44.09 प्रतिशत था और 2025–26 में 60.21 प्रतिशत हुआ, जो राज्य में पहली बार 60 प्रतिशत के पार है (पटना प्रेस, 2026क)। 30 सितंबर 2026 को यह 60.17 प्रतिशत रहा (न्यू केरल, 2026)। मार्च 2023 में यह 53.01 प्रतिशत था, जबकि राष्ट्रीय औसत 75.80 प्रतिशत था (ग्रांट थॉर्नटन, तिथि अनुपलब्ध)। राज्यसभा में भी स्वीकार किया गया कि बिहार का अनुपात अखिल भारतीय अनुपात से कम है (राज्यसभा, 2024)।

**तालिका 4: बिहार के बैंकिंग आँकड़े**

| माप | मार्च 2026 | 30 सितंबर 2026 | छह माह में परिवर्तन |
|---|---|---|---|
| कुल जमा (करोड़ ₹) | 6,15,428 | 6,49,225 | लगभग +5.5% |
| कुल बकाया ऋण (करोड़ ₹) | 3,70,563 | 3,90,655 | लगभग +5.4% |
| ऋण-जमा अनुपात | 60.21% | 60.17% | लगभग स्थिर |

स्रोतः पटना प्रेस (2026क); न्यू केरल (2026)। गणनाः लेखक।

2025–26 में पिछले वर्ष की तुलना में जमा 51,983 करोड़ रुपये (लगभग 9.2%) और ऋण 37,882 करोड़ रुपये (लगभग 11.4%) बढ़ा (गणनाः लेखक), अर्थात ऋण वृद्धि जमा वृद्धि से तेज़ रही। वर्ष 2026–27 के

लिए वार्षिक ऋण योजना का लक्ष्य 4.95 लाख करोड़ रुपये है, जिसके विरुद्ध सितंबर तक 1,89,343 करोड़ रुपये (38.25%) का वितरण हुआ (न्यू केरल, 2026)। मार्च 2023 में बिहार का अनुपात राष्ट्रीय औसत का लगभग 70 प्रतिशत था और अंतर लगभग 22.8 प्रतिशत–अंक का था (गणनाः लेखक)। प्रगति स्पष्ट है, पर राज्य अब भी पीछे है।

- **जन धन खाते**

31 मार्च 2026 को बिहार में 6,83,52,267 जन धन खाते और 30,380 करोड़ रुपये जमा थे (डेटाफुल, 2026)। राष्ट्रीय स्तर पर मार्च 2026 में 57.71 करोड़ खाते और 2.94 लाख करोड़ रुपये जमा थे (चोला सिक्योरिटीज़, 2026)।

**तालिका 5: जन धन, मार्च 2026**

| संकेतक | बिहार | भारत | टिप्पणी |
|---|---|---|---|
| खाते | 6.84 करोड़ | 57.71 करोड़ | बिहार का हिस्सा लगभग 11.8% |
| कुल जमा | 30,380 करोड़ ₹ | 2.94 लाख करोड़ ₹ | बिहार का हिस्सा लगभग 10.3% |
| प्रति खाता औसत जमा | लगभग ₹4,445 | लगभग ₹5,094 | बिहार राष्ट्रीय औसत का लगभग 87% |

स्रोतः डेटाफुल (2026); चोला सिक्योरिटीज़ (2026)। गणनाः लेखक।

बिहार के पास देश के लगभग 11.8 प्रतिशत जन धन खाते हैं, पर जमा में हिस्सेदारी लगभग 10.3 प्रतिशत है और प्रति खाता औसत जमा राष्ट्रीय औसत से कम है। आरटीआई के आँकड़ों में बिहार के लगभग 62.35 लाख खाते शून्य शेष वाले हैं, जो बिहार के खातों का लगभग 9.1 प्रतिशत है; राष्ट्रीय स्तर पर यह अनुपात लगभग 9.7 प्रतिशत है (सियासत, 2026)।

- **इंटरनेट और मोबाइल की पहुँच**

जून 2026 में देश का टेली–घनत्व 94.31 प्रतिशत था, जबकि बिहार का 63.95 प्रतिशत, जो सभी दूरसंचार सर्किलों में सबसे कम है (फ़ोनएरीना, 2026)। दूरसंचार विभाग के आँकड़ों के अनुसार बिहार में इंटरनेट घनत्व प्रति 100 व्यक्ति 51.65 कनेक्शन है, जबकि राष्ट्रीय औसत 76.59 है; बिहार में 8.95 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ता हैं, जो उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद तीसरे स्थान पर है (पटना प्रेस, 2026ख)।

**तालिका 6: कनेक्टिविटी, बिहार और भारत**

| संकेतक | बिहार | भारत | अंतर | बिहार का अनुपात |
|---|---|---|---|---|
| टेली-घनत्व (जून 2026) | 63.95% | 94.31% | 30.4 प्रतिशत-अंक | लगभग 68% |
| इंटरनेट घनत्व (प्रति 100 व्यक्ति) | 51.65 | 76.59 | 24.94 | लगभग 67% |

स्रोतः फ़ोनएरीना (2026); पटना प्रेस (2026ख)। गणनाः लेखक।

संख्या की दृष्टि से बिहार बड़ा बाज़ार है, पर प्रति व्यक्ति पहुँच में पीछे है। नेटवर्क की यह कमी छोटे व्यापारियों के लिए यूपीआई स्वीकार करने में व्यावहारिक बाधा बन सकती है।

- **प्रति व्यक्ति यूपीआई उपयोग**

एनपीसीआई के राज्यवार आँकड़ों के विश्लेषण के अनुसार 2024–25 में प्रति व्यक्ति यूपीआई लेन–देन तेलंगाना में 274, दिल्ली में 241, गोवा में 229 और कर्नाटक में 203 रहे, जबकि सबसे कम त्रिपुरा (33), मणिपुर (35), बिहार (44) और उत्तर प्रदेश (50) में रहे (डेटाफुल, तिथि अनुपलब्ध)। तेलंगाना का उपयोग बिहार से लगभग 6.2 गुना है (गणनाः लेखक)।

## गया जिले की पृष्ठभूमि

गया की अर्थव्यवस्था में शहरी बाज़ार, बोधगया और विष्णुपद से जुड़ा पर्यटन एवं तीर्थ–आधारित व्यापार, और विस्तृत ग्रामीण क्षेत्र शामिल हैं। यहाँ के छोटे व्यापारियों में किराना, कपड़ा, हार्डवेयर, होटल–रेस्तराँ, गेस्ट हाउस, ठेले–खोमचे और साप्ताहिक हाट के विक्रेता आते हैं।

**तालिका 7: जनसंख्या, जनगणना 2011**

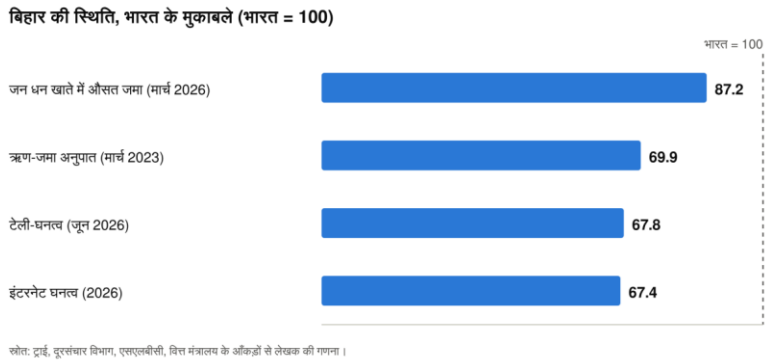
| संकेतक | भारत | बिहार | गया |
|---|---|---|---|
| कुल जनसंख्या | 121,01,93,422 | 10,38,04,637 | 43,79,383 |
| ग्रामीण जनसंख्या | 83,30,87,662 | 9,20,75,028 | 38,03,888 |
| शहरी जनसंख्या | 37,71,05,760 | 1,17,29,609 | 5,75,495 |
| शहरी हिस्सेदारी | लगभग 31.2% | लगभग 11.3% | लगभग 13.1% |
| क्षेत्रफल (वर्ग किमी) | 32,87,240 | 94,163 | 4,976 |
| घनत्व (प्रति वर्ग किमी) | लगभग 368 | लगभग 1,102 | लगभग 880 |

स्रोत: गया जिला प्रशासन (जनगणना 2011)। गणना: लेखक।

गया बिहार की जनसंख्या का लगभग 4.2 प्रतिशत है। इसकी लगभग 87 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है; शहरी हिस्सेदारी बिहार के औसत (11.3%) से कुछ अधिक है, पर राष्ट्रीय औसत (31.2%) से बहुत कम। इसलिए जिले के अधिकांश छोटे व्यापारी ग्रामीण और कस्बाई बाज़ारों में होंगे, जहाँ नेटवर्क, डिजिटल साक्षरता और बैंक शाखाओं की उपलब्धता सीमित हो सकती है। जिले की जनसंख्या के लिए गया जिला प्रशासन का आँकड़ा लिया गया है।

## विमर्श

- **मुख्य निष्कर्ष**
  - ढाँचा तेज़ी से बना है। यूपीआई का लेन–देन चार वर्ष में लगभग 3.5 गुना हुआ और औसत राशि घटी, जो छोटे भुगतानों में बढ़ते उपयोग का संकेत है।
  - खाते बढ़े, पर उपयोग असमान है। जन धन खाते लगभग चार गुना हुए, फिर भी हर चौथा खाता निष्क्रिय है।
  - बिहार की बैंकिंग सुधर रही है, पर पीछे है। ऋण–जमा अनुपात 44.09 से 60.21 प्रतिशत हुआ (लगभग 16 प्रतिशत–अंक की वृद्धि), फिर भी राष्ट्रीय औसत से कम है।
  - कनेक्टिविटी बाधा हो सकती है। चित्र 1 के अनुसार बिहार के टेली–घनत्व, इंटरनेट घनत्व और ऋण–जमा अनुपात राष्ट्रीय औसत के लगभग 67 से 70 प्रतिशत हैं।
  - उपयोग कम है। प्रति व्यक्ति 44 यूपीआई लेन–देन के साथ बिहार सबसे कम उपयोग वाले राज्यों में है।
  - गया ग्रामीण–प्रधान है। लगभग 87 प्रतिशत आबादी गाँवों में है।




**चित्र 1: बिहार और भारत की तुलना (भारत = 100)**

- **व्याख्या की सीमा और शोध–अंतराल**

ये सभी आँकड़े समग्र हैं। राष्ट्रीय यूपीआई आँकड़ों में व्यक्ति–से–व्यक्ति भुगतान, बिल भुगतान, बड़े व्यापारी और छोटी दुकानें सब शामिल हैं, इसलिए इनसे गया के छोटे व्यापारियों के डिजिटल अपनाव या उनके व्यावसायिक परिणामों का सीधा निष्कर्ष नहीं निकलता। चार अंतराल स्पष्ट हैं:

- गया के छोटे व्यापारियों की कुल बिक्री में डिजिटल भुगतान के हिस्से का कोई प्रकाशित आँकड़ा नहीं है।
- डिजिटल लेन–देन रिकॉर्ड और बैंक ऋण की उपलब्धता के बीच संबंध बिहार में प्रमाणित नहीं है।
- नेटवर्क, कौशल, विश्वास और ग्राहकों की पसंद जैसी बाधाओं का महत्व–क्रम बिहार के लिए ज्ञात नहीं है।
- नोटबंदी के बाद कितने व्यापारी डिजिटल बने रहे और कितने नकद पर लौटे, इसका जिला–स्तरीय प्रमाण नहीं है।

**प्रस्तावित परिकल्पनाएँ**

- गया शहर और बोधगया के व्यापारियों में डिजिटल भुगतान का उपयोग ग्रामीण प्रखंडों के व्यापारियों से अधिक है।
- कम उम्र और अधिक शिक्षा वाले व्यापारी अधिक डिजिटल भुगतान स्वीकार करते हैं।
- डिजिटल बिक्री का अधिक हिस्सा रखने वाले व्यापारियों की बिक्री अधिक स्थिर और नकद–संभाल की लागत कम है।
- डिजिटल लेन–देन का रिकॉर्ड रखने वाले व्यापारियों को बैंक ऋण मिलने की संभावना अधिक है।
- नेटवर्क की समस्या, कौशल की कमी और ग्राहकों की नकद–प्राथमिकता सबसे प्रमुख बाधाएँ हैं।
- 2016 की नकदी की कमी के बाद कई व्यापारियों ने पहली बार डिजिटल भुगतान अपनाया, पर कुछ बाद में नकद पर लौट गए।

**सीमाएँ**

अध्ययन प्रकाशित द्वितीयक आँकड़ों तक सीमित है और गया के व्यापारियों के बारे में नई जानकारी नहीं देता। राष्ट्रीय और राज्य के औसत किसी एक वर्ग की स्थिति नहीं बताते। एनपीसीआई के राज्यवार आँकड़ों में लगभग 27.5 प्रतिशत लेन–देन का राज्य अवर्गीकृत है, इसलिए राज्यवार प्रति व्यक्ति संख्याएँ अनुमानात्मक संकेत हैं। विभिन्न आँकड़े अलग–अलग तिथियों के हैं, जिनकी अवधि तालिकाओं में दर्शाई गई है। जनगणना के आँकड़े 2011 के हैं। गया के जिला–स्तरीय बैंकिंग और यूपीआई आँकड़े एकरूप श्रृंखला में उपलब्ध नहीं थे, इसलिए जिले का विश्लेषण जनसांख्यिकीय संरचना पर आधारित है।

**निष्कर्ष एवं सुझाव**

भारत में डिजिटल भुगतान का ढाँचा तेज़ी से विकसित हुआ है। यूपीआई का लेन–देन चार वर्ष में लगभग साढ़े तीन गुना, आरबीआई का सूचकांक 2018 से लगभग 5.2 गुना और जन धन खाते लगभग चार गुना हुए। बिहार में ऋण–जमा अनुपात, इंटरनेट घनत्व और टेली–घनत्व राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं, और प्रति व्यक्ति यूपीआई उपयोग देश में सबसे कम राज्यों में है। गया जैसे ग्रामीण–प्रधान जिले में, जहाँ लगभग 87 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है, छोटे व्यापारियों के सामने नेटवर्क, डिजिटल साक्षरता और बैंक–पहुँच की चुनौतियाँ अधिक हो सकती हैं। नोटबंदी के अध्ययन दिखाते हैं कि नकद–निर्भर क्षेत्रों पर अल्पकालिक प्रभाव वास्तविक था, किंतु वह कुछ महीनों में समाप्त हो गया और वैकल्पिक भुगतान तकनीकों का अपनाव तेज़ हुआ।

## प्रारंभिक सुझाव

1. बाज़ार–समूहों में बैंकों द्वारा यूपीआई प्रशिक्षण और क्यूआर कोड शिविर।
2. छोटे व्यापारियों के लिए ऐसे ऋण–उत्पाद, जिनमें यूपीआई स्टेटमेंट आय के प्रमाण के रूप में मान्य हो।
3. ग्रामीण बाज़ारों में नेटवर्क की गुणवत्ता सुधारना।
4. धोखाधड़ी की शिकायत के लिए स्थानीय हेल्पडेस्क।
5. बाज़ार संघों में "डिजिटल मित्र" तैयार करना, जो पड़ोसी दुकानदारों की सहायता करें।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. आउटलुक मनी. (2026, 1 अक्टूबर). सितंबर में यूपीआई से 24.07 अरब लेन–देन, मूल्य 29.37 लाख करोड़ रुपये. https%@@www-outlookmoney-com@banking@upi&processes&2407&billion&transactions&worth&rs&2937&lakh&crore&in&september
2. काउंटरव्यू. (2017, मई). विश्व बैंक: नोटबंदी ने गहरी चोट की है. https%@@www-counterview-in@2017@05@world&bank&demonetization&has&hit&hard-html
3. क्रॉनिकल इंडिया. (2026, अक्टूबर). प्रधानमंत्री जन धन योजना के 12 वर्ष. https%@@www-chronicleindia-in@online&magazine@csce&october&2026@12&years&of&pradhan&mantri&jan&dhan&yojana pmjdy
4. गया जिला प्रशासन. (जनगणना 2011). जनसांख्यिकीः जनगणना 2011 के अनुसार विवरण. https%@@gaya-nic-in@demography@
5. ग्रांट थॉर्नटन भारत. (तिथि अनुपलब्ध). बिहार में ऋण–पहुँच में सुधार. https%@@www-grantthornton-in@insights@articles@improving&credit&penetration&in&bihar@
6. चोडोरो–रीच, जी., गोपीनाथ, जी., मिश्रा, पी., एवं नारायणन, ए. (2020). नकदी और अर्थव्यवस्थाः भारत की नोटबंदी से साक्ष्य. क्वार्टरली जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, 135(1), 57–103. https%@@doi-org@10-1093@qje@qjz027
7. चोला सिक्योरिटीज़. (2026). प्रधानमंत्री जन धन योजना में जमा मार्च 2015 के 15,670 करोड़ रुपये से बढ़कर मार्च 2026 तक 2.94 लाख करोड़ रुपये. https%@@www-cholasecurities-com@news@economy&news@deposits&under&pradhan&mantri&jan&dhan&yojana&spike&from&rs&15670&crore&in&mar&15&to&rs&2&94&lakh&crore&by&mar&26@1680609
8. डेटाफुल. (2026). प्रधानमंत्री जन धन योजनाः वर्ष, राज्य एवं लिंग के अनुसार खातों की संख्या और जमा (आँकड़ा–समुच्चय). https%@@dataful-in@datasets@21232@
9. डेटाफुल. (तिथि अनुपलब्ध). भारत के राज्यों में यूपीआई उपयोग कैसे भिन्न है. https%@@insights-dataful-in@articles@here&is&how&upi&usage&differs&across&indian&states
10. डेविस, एफ. डी. (1989). बोधित उपयोगिता, बोधित उपयोग–सुगमता और सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगकर्ता–स्वीकृति. एमआईएस क्वार्टरली, 13(3), 319–340.
11. न्यू केरल. (2026, 24 अक्टूबर). बिहार ने 2026–27 के लिए 4.95 लाख करोड़ रुपये का ऋण लक्ष्य तय किया, बैंकों को ऋण–वितरण तेज़ करने के निर्देश. https%@@www-newkerala-com@news@a@bihar&sets&rs&495&lakh&crore&annual&credit&675-htm

12. पटना प्रेस. (2026क, 18 मई). बिहार में पहली बार ऋण–जमा अनुपात 60% के रिकॉर्ड स्तर पर, ध्यान कृषि और प्राथमिकता क्षेत्र ऋण पर. https%@@patnapress-com@bihar&records&60& percent&cd&ratio&first&time@

13. पटना प्रेस. (2026ख, 10 अगस्त). बिहार में लगभग 9 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ता; ग्रामीण पहुँच अब भी कम क्यों? https%@@patnapress-com@bihar&internet&subscribers&rural&urban &digital &divide@

14. फ़ोनएरीना. (2026). जून 2026 में भारत का दूरसंचार उपभोक्ता आधार 1.34 अरब, वायरलेस उपभोक्ता 1.3 अरब के पारः ट्राई. https%@@www-fonearena-com@blog@488465@indias&telecom &subscriber&base&june&2026-html

15. बिज़नेस स्टैंडर्ड. (2022). सितंबर में यूपीआई से 6.8 अरब से अधिक लेन–देन, मूल्य 11.17 ट्रिलियन रुपये. https%@@www-business&standard-com@article@companies@upi&processes&over& 6&8&billion&transactions&in&sep&worth&rs&11&17&trln&122100300765&1-html

16. भारतीय रिज़र्व बैंक. (2023, 27 जुलाई). आरबीआईः मार्च 2023 का डिजिटल भुगतान सूचकांक (प्रेस विज्ञप्ति). https%@@rbi-org-in@Scripts@BS&PressReleaseDisplay-aspÛ\prid¾56104

17. भारतीय रिज़र्व बैंक. (2024, 26 जुलाई). आरबीआईः मार्च 2024 का डिजिटल भुगतान सूचकांक (प्रेस विज्ञप्ति). https%@@rbi-org-in@Scripts@BS&PressReleaseDisplay-aspÛ\prid¾58371

18. भारतीय रिज़र्व बैंक. (2026, 12 फ़रवरी). आरबीआईः सितंबर 2025 का डिजिटल भुगतान सूचकांक (प्रेस विज्ञप्ति). https%@@rbi-org-in@scripts@BS&PressReleaseDisplay-aspÛ\prid¾62213

19. राज्यसभा. (2024, 30 जुलाई). अतारांकित प्रश्न संख्या 873ः बिहार में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का ऋण–जमा अनुपात. https%@@rsdebate-nic-in@bitstream@123456789@750061@1@ PQ&265&30072024&U873&p336&p336-pdf

20. रोगॉफ़, के. एस. (2016). नकदी का अभिशाप. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

21. रोजर्स, ई. एम. (2003). नवाचारों का प्रसार (5वाँ संस्करण). फ्री प्रेस.

22. सियासत. (2026). हर चौथा जन धन खाता निष्क्रियः आरटीआई. https%@@www-siasat-com@every&fourth&jan&dhan&account&inoperative&rti&3537142@

23. स्टार्टअपटॉकी. (2026क). यूपीआई का अब तक का सर्वाधिक मासिक लेन–देनः अगस्त 2026 में 24.51 अरब. https%@@startuptalky-com@india&upi&transactions&august&2026&record&volume@

24. स्टार्टअपटॉकी. (2026ख). सितंबर 2026 में यूपीआई लेन–देन मासिक आधार पर 1.8% घटकर 24.07 अरब. https%@@startuptalky-com@upi&transactions&september&2026@

❑❑❑